सोशल मीडिया और पर्यावरणीय चिंता

अनिल विठ्ठल मकर,
शोधछात्र, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
दूरभाष- 9673417920
ई-मेल: anilmakar70@gmail.com

शोधालेख का सार

वर्तमान समय में पर्यावरण विषय चिंता एवं चिंतन का बन गया है। इसलिए तो वह साहित्य की विविध विधाओं के केंद्र में और सोशल मीडिया में भी छाया हुआ दिखाई देता है। आज डिजिटल मीडिया के युग में वॉट्स ऐप, यूट्यूब, फेसबुक, ट्यूटर, इन्स्टाग्राम, ब्लॉग जैसे विविध प्लेटफॉर्म मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। इसमें रोजमर्रा की विविध घटनाओं के साथ विशेष अवसरों पर पर्यावरण संबंधी भी चर्चा होती रहती है। इसमें पर्यावरण समस्या संबंधी चिंता व्यक्त की हुई दिखाई देती है। आज डिजिटल के युग में छोटे-छोटे संदेश लोगों को लुभाते हैं। इसलिए पर्यावरण जागृति के लिए ऐसे संदेशों पर ही जोर दिया दिखाई देता है।

बीज शब्द : सोशल मीडिया और पर्यावरण, पर्यावरणीय चिंता, प्रदूषण।

आज का युग इंटरनेट का है। इंटरनेट के इस युग में मनुष्य को सोशल मीडिया के रूप में अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन मिल गया है। मनुष्य करीब-करीब होकर भी भलेही आपस में बातचीत न करें लेकिन सोशल मीडिया पर जरूर व्यक्त होता है। वॉट्स ऐप, टेलीग्राम, यूट्यूब, फेसबुक, ट्यूटर, इन्स्टाग्राम, ब्लॉग जैसे विविध वेब आधारित प्लेटफॉर्मों पर घरेलु लेकर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय न जाने कौन-कौन से विषयों पर चर्चा होती रहती है। इसके लिए कोई भी विषय अछूता नहीं हैं। सोशल मीडिया विशेषज्ञ डॉ. जयसिंह बी. झाला इस संदर्भ में लिखते हैं-"सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में पृथ्वी का दायरा सिमटता-सा नजर आ रहा है। आज विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना हम घर में बैठे-बैठे ही देख रहे हैं। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर हमारे विचारों का विनिमय इस तरह हो रहा है जैसे हम परिवार के लोगों से करते हैं।"[1] इसमें पर्यावरण विषय भी है। इस डिजिटल मीडिया पर पर्यावरण विषय पर भलेही रोज-रोज चर्चा न होती हो लेकिन 'पर्यावरण दिवस', 'जल दिवस' जैसे विशेष अवसरों पर इस विषय पर जरूर चर्चा होती है। इसमें वर्तमान समय में बढ़ते पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर चिंता जताई हुई दिखाई देती है। फिलहाल इंटरनेट के विविध वेबसाइटों पर पर्यावरण संबंधी विविध लेख, किताबें तथा अन्य ढेर सारी जानकारी देखने को मिलती है लेकिन रोजमर्रा के उपयोग वॉट्स ऐप, ट्यूटर, फेसबुक, ब्लॉग, इन्स्टाग्राम जैसे विविध सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर साझा (शेअर) की जानकारी ज्यादा देखी जाती है। विविध डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर साझा होनेवाला यह साहित्य ही है लेकिन वह अलग प्रकार का है। संक्षिप्तता यह उसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता है। जो भी संदेश हो इस डिजिटल माध्यमों के माध्यम से कम शब्दों में प्रभावी रूप से भेजा जाता है। इसलिए तो आज 'सोशल मीडिया का साहित्य' अलग साहित्य प्रकार सामने आ रहा है। इसमें सभी के लिए अभिव्यक्ति के नए द्वार खुल गए हैं। साथही इसे प्रकाशित करने के लिए किसी प्रकाशक की जरूरत नहीं पड़ती। इसलिए आज मनुष्य इन डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से अबाध रूप में विचार व्यक्त कर सकता है, इसमें पर्यावरण जैसा गहन विषय भी है।

आज सोशल मीडिया के युग में लोगों को बहुत बड़े-बड़े संदेश या जानकारी पढ़ने की आदत कम हो गई है। इसलिए तो सोशल मीडिया में विशेष अवसरों पर पर्यावरण संबंधी संदेशों की धूम दिखाई देती है। ये संदेश पढ़े भी जाते हैं और एक-दूसरे को बड़े पैमाने पर साझा भी किए जाते हैं। पर्यावरणप्रेमी तो विविध माध्यमों से पर्यावरणसंबंधी चिंता जताते ही है लेकिन आम आदमी भी आज जागरूक होता दिखाई देता है। पर्यावरण हानी के दुष्परिणाम अब उसे भुगतने पड़ रहे हैं। इसलिए तो वह खुद न सुधरे लेकिन दूसरों को उपदेश देने के लिए क्यों न हो डिजिटल मीडिया के माध्यम से व्यक्त होता दिखाई देता है। फिलहाल जल, वायू, जमीन प्रदूषण बडे पैमाने हो रहा है। इसलिए पर्यावरण विशेषज्ञ भी इस संदर्भ में चिंता जताते हुए दिखाई देते हैं। बढते वायू प्रदूषण के संदर्भ में अभिजीत घोरपडे लिखते हैं- "वायूंचे वातावरणातील प्रमाण वाढण्यास कारखाने, औष्णिक वीजकेंद्रे, वाहने, जंगलतोड, जमिनीचा असंतुलित पद्धतीने वापर, शेतात रासायनिक खतांचा अधिक वापर ही कारणे आहेत. अर्थातच ही माणसाचीच 'देण' आहे. या वायूंचे प्रमाण वाढेल तशी जागतिक तापमान वाढ होते."[2] (वायु का वातावरण में प्रमाण बढने के लिए कारखाने, औष्णिक विद्युत केंद्र, वाहन, जंगल कटाई, जमीन का असंतुलित रूप में उपयोग, खेत में रासायनिक खाद का अधिक मात्रा में उपयोग आदि कारण हैं। असल में यह मनुष्य की ही देन है। जैसे-जैसे इन वायुओं का प्रमाण बढता है वैसे वैश्विक तापमान वृद्धि होती है।) संदर्भ में चिंता जताई दिखाई देती है। यह चिंता सोशल मीडिया के छोटे-छोटे संदेश, कविताओं छोटी'छोटी पंक्तियाँ, शेरो-

शायरी के माध्यम से व्यक्त होती दिखाई देती है। यहीं चुनिंदा शब्दों की चुनिंदा पंक्तियाँ पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर निशाना साधने तथा लोगों को सचेत बनाने में सहायक बन जाती है।

पर्यावरण संबंधी समस्या को लेकर न सरकार गंभीर है न उद्यमी। ये उद्यमी कल-कारखानों के माध्यम से बड़े पैमाने पर पर्यावरण का दोहन करते हैं। सरकार को भी इन उद्यमियों के द्वारा टैक्स आदि मिलता है, इसलिए वह चूप बैठती है। इसलिए तो सोशल मीडिया के एक संदेश चिंता व्यक्त करते हुए कहा गया है-

"सरकार सत्ता के नशे में चूर है
जनता दूषित जल पीने को मजबूर है।"

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से प्रदूषण रोकने के लिए सरकार नाकाम ठहरने के कारण उसपर निशाना साधने का प्रयास किया है। अनेक बीमारियों का कारण अशुद्ध हवा और पानी ही है। करीब 70 प्रतिशत से ज्यादा बीमारियाँ दूषित जल के कारण फैलती है लेकिन इसे रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाता। इस प्रदूषण के लिए जिम्मेदार मनुष्य ही है। इसलिए तो शुद्ध जल के संदर्भ में लोगों को सचेत करते हुए एक सोशल मीडिया संदेश में लिखा है-

"उतनाही सुंदर कल होगा
जितना स्वच्छ जल होगा"

आज जल प्रदूषण काफी बढ़ गया है। पहले आदमी नदी, कुएँ, नहर आदि कहीं का भी पानी निःशंक रूप में पीता था। क्योंकि वह पानी शुद्ध होता था। वह पीने व्यक्ति को कोई तकलीफ नहीं होती थी। जैसे-जैसे प्रदूषण बढ़ने लगा वैसे-वैसे बोथलों में शुद्ध पानी बिकना शुरू हुआ। शुरू में यह लोगों को अचरज लगता था लेकिन आज हर गाँव में जल शुद्धिकरण प्रकल्प शुरू हो गए हैं। धरती पर ऐसा ही प्रदूषण बढ़ता रहा तो शुद्ध हवा के लिए भी ऐसे प्रकल्प शुरू ना करना पड़े इसप्रकार की चिंता भी सोशल मीडिया संदेशों के माध्यम से जताई दिखाई देती है। 'जल है तो कल है' यह सरकारी विज्ञापन भी पानी के संदर्भ में बहुत कुछ बताती है।

पर्यावरण संबंधी समस्या के लिए कोई अकेला व्यक्ति जिम्मेदार नहीं। इसके लिए थोड़ी-बहुत मात्रा में ही क्यों न हो सब जिम्मेदार हैं। इसी के परिणाम सभी को भुगतने पड़ रहे हैं। इस बात की ओर यह सोशल मीडिया संदेश निर्देश करता है-

"बीमारी रूपी मुसीबत
हर किसी के हिस्से में आया है
चाहे थोड़ा या ज्यादा सबने प्रदूषण फैलाया है"

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से हरएक को अपना-अपना आइना दिखाने का प्रयास किया है। बढ़ता शहरीकरण भी पर्यावरण को खतरा निर्माण करने के लिए जिम्मेदार है। इस संदर्भ में भी जागरूक लोक सोशल मीडिया संदेश के माध्यम से आवाज उठाते हुए दिखाई देते हैं। आज हरएक व्यक्ति शहर की ओर भाग रहा है। इससे पेड़ों को उजाड़ सीमेंट का जंगल बनाया जा रहा है। आज का मनुष्य शहर भी चाहता है और पर्यावरणपूरक अच्छी जिंदगी भी चाहता है। मनुष्य की दोगली वृत्ति मयंक तिवारी ने अपने वेब पर प्रकाशित कविता में लिखा है-

"बड़ी मासूम-सी है ये जिंदगी मेरी
शहर में रहूँ और गाँव भी चाहिए
बस बैठा रहूँ ऊँची इमारतों में मैं
पेडों को काटूँ और छाँव भी चाहिए।"

इस प्रकार उन्होंने मनुष्य किसप्रकार स्वार्थी है स्पष्ट किया है। सोशल मीडिया संदेशों के माध्यम से प्लास्टिक से पर्यावरण की होनेवाली हानी पर भी निर्देश किया है। प्लास्टिक के चलते मनुष्य, पशु तथा पृथ्वी पर स्थित जीवों विपरित परिणाम हो रहा है। उन्हें अनेक रोगों का सामना करना पड़ता है। प्लास्टिक आसानी से विघटन नहीं होता। आज लोग कोई भी चीज लाने के लिए प्लास्टिक की माँग करते हैं। ज्यादातर चीजें प्लास्टिक में ही पैक की जाती है। इसे पर्यावरण की बहुत बड़ी हानी होती है। इस ओर से सोशल मीडिया संदेशों के माध्यम से निर्देश किया है। सोशल मीडिया संदेश के माध्यम से प्लास्टिक मुक्ति संबंधी जनजागृति करते हुए लिखा है-

"प्लास्टिक थैली पर करो बहिष्कार
धरती पर करो यह उपकार
कपडे की बैग है इसका विकल्प
प्लास्टिक छोड़ने का करो संकल्प"

इस प्रकार लोगों की प्लास्टिक पर बहिष्कार करने की अपील की गई है। यह प्लास्टिक पानी के साथ समुद्र के तल में जाकर बैठ जाता है। इससे जलचरों को धोका पहुँच रहा है। प्लास्टिक के चलते उपजाऊ जमीन बंजर होती जा रही है। इससे मुक्ति पाने अपील करते हुए एक संदेश में लिखा है-

"प्लास्टिक को धरती से दूर भगायें,
धरती को बंजर होने से बचाये"

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से प्लास्टिक मुक्ति संदेश दिया है। साथही कुछ संदेशों के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी खतरों से भी अवगत कराया है। प्लास्टिक को शान न समझकर उसका नामो निशान मिटाने की भी अपील छोटे-छोटे सोशल मीडिया संदेशों द्वारा की हुई दिखाई देती है। इसलिए तो कहा है-

"पर्यावरण को बचाना है,
प्लास्टिक को जड़ से मिटाना है"

प्रदूषण कर मनुष्य एक प्रकार से धरती पर अत्याचार कर रहा है। यह अत्याचार अब धरती भी बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। इसलिए एक सोशल मीडिया संदेश के माध्यम से धरती की पुकार सामने आती है-

"*बंद करो यह अत्याचार*
धरती माँ की यही पुकार"

धरती पर प्रदूषण तथा विविध माध्यमों से अत्याचार के कारण ही मौसम चक्र बदल रहा है। कभी बाढ़ तो कभी सूखा, भूचाल आदि चलते मनुष्य का काफी मात्रा में नुकसान हो रहा है। अगर मनुष्य को अपने भविष्य को सुरक्षित करना हो तो पहले पर्यावरण को बचाना होगा। आज के स्वार्थी मनुष्य को न अपनी खुद चिंता है, न अगली पीढ़ी की न पशु-पक्षियों की। इस ओर से कुछ सोशल मीडिया संदेशों के माध्यम से निर्देश किया है। सोशल मीडिया पर प्रसिद्ध एक कविता में पर्यावरण संबंधी चिंता जताते हुए कहा है-

"ये कटते वृक्ष
ये सूखती नदियाँ
ये सिमटते पर्वत
एक रोज
यूंही खत्म हो जाएंगे"

इस प्रकार बड़े पैमाने पेड़ कटाई, कल-कारखानों से बढ़ता हवा और जल प्रदूषण से काफी नुकसान हो रहा है। दूसरी ओर रासायनिक खद के माध्यम से जमीन का भी बड़े पैमाने पर नुकसान हो रहा है। सोशल मीडिया की एक काव्य पंक्ति इस ओर निर्देश करते हुए लिखा है-

"रासायनिक खाद का कम करें छिडकाव
भूमि को प्रदूषित होने से बचाव"

इसप्रकार प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से भूमि को प्रदूषित होने की अपील की गई है। सोशल मीडिया की एक काव्य में प्रकृति की उदारता और मनुष्य की निष्ठुरता की ओर भी निर्देश किया है-

"मानव तूने अपनी जरूरतों के लिए,
वातावरण को कितना दूषित किया है,
फिर भी पर्यावरण ने तुझे सब कुछ दिया है"

इस प्रकार सोशल मीडिया के विविध संदेशों के माध्यम से वर्तमान पर्यावरण की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण संबंधी जागृत करने का प्रयास किया है। पर्यावरण बचाओ के संदर्भ में कई स्लोगन सोशल मीडिया पर साझा होते दिखाई देते हैं। इनमें 'आओ सभी करें पर्यावरण की रक्षा, तभी होगी इस सारी दुनिया की रक्षा', 'होते हैं हरे भरे पेड़ जहाँ, होता है धरती का स्वर्ग वहाँ', 'कभी भी पेड़ों को करों मत नष्ट, नहीं तो सांस लेने में होगा कष्ट', 'पेड़ पौधे है हम सब लोगों की जान, इसलिए करों इनका ज्यादा सम्मान' जैसे अनेक संदेशों के माध्यम से प्रकृति को बचाने अपील सोशल मीडिया पर की हुई दिखाई देती है।

इस प्रकार आज लोगों में सबसे ज्यादा प्रचलित नव्य जनसंचार माध्यम अर्थात् सोशल मीडिया पर भी पर्यावरण संबंधी चेतना जगी हुई दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में पर्यावरण यह विषय चिंता और चिंतन का बन गया है। इसलिए यह विषय साहित्य की विविध विधाओं के केंद्र में आ गया है और इंटरनेट तथा सोशल मीडिया पर भी छाया हुआ दिखाई देता है। वॉट्स ऐप, फेसबुक, ट्यूटर, इन्स्टाग्राम, ब्लॉग तथा वेब के विविध प्लैटफॉर्मों पर भी पर्यावरण संबंधी चिंता व्यक्त की हुई दिखाई देती है। साथ ही इस धरती को पौधारण कर तथा प्रदूषण कम कर किस प्रकार बचा सकते हैं इस ओर भी निर्देश किया है।

संदर्भ :

1. डॉ. जयसिंह बी. झाला, सोशल मीडिया एवं समाज, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2014, पृ.127
2. अभिजीत घोरपडे, ग्लोबल वॉर्मिंग, राजहंस प्रकाशन प्रा. लि., पुणे, सं. 2010, पृ. 45
3. https://www.khayalrakhe.com/2018/09/environment-poem-hindi.html
4. https://thesimplehelp.com/poem-on-environment-in-hindi/
5. https://www.thinkdear.com/environment-quotes-in-hindi/
6. https://jantahit.in/world-environment-day-slogan-in-hindi.html
7. https://www.wideangleoflife.com/paryavaran-sanrakshan-ke-kathan-conservation-quotes-in-hindi/
8. https://www.fbstatusquotes.com/environment-quotes-in-hindi/